INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शिक्षा में योगदान पर अध्ययन

(Study on Contribution of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan to Education)

Kanchan Jain
Research scholar
Department of Education,
Mangalayatan University,
Aligarh (Uttar Pradesh, India)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2022-38233842/IRJHIS2209010

प्रस्तावना :

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की जयंती प्रतिवर्ष 5 सितंबर को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाई जाती है। आज जब शिक्षा की गुणात्मकता का ह्रास होता जा रहा है, गुरु-शिष्य संबंधों की पवित्रता को ग्रहण सा लगता प्रतीक हो रहा है। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के स्मरण से फिर एक नई चेतना पैदा करने का प्रयास हो सकता है। जब सन् 1962 में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन राष्ट्रपति बने थे, तब शिष्य और प्रशंसक उनके पास गए थे, उन्होंने उनसे निवेदन किया, कि वे उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाना चाहते हैं।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा, 'मेरे जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने से निश्चय ही मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव करूंगा।' तब से 5 सितंबर सारे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

डॉ. राधाकृष्णन अपनी बुद्धिमतापूर्ण व्याख्याओं, आनंददायी अभिव्यक्ति और हंसाने, गुदगुदाने वाली कहानियों से अपने छात्रों को मंत्रमुग्ध कर लेते थे। वे सभी छात्रों को प्रेरित करते थे कि वे उच्च नैतिक मूल्यों को अपने आचरण में उतारकर अपने देश का नाम रोशन करें । वे जिस विषय को भी पढ़ाते थे पढ़ाने से पूर्व स्वयं उसका बारीकी से अध्ययन करते थे। दर्शनशास्त्र जैसे गंभीर विषय को भी वे अपनी शैली की नवीनता से सरलतम और रोचक बना देते थे।

शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. राधाकृष्णन जी का जो अमूल्य योगदान रहा है, वह निश्चय ही अविस्मरणीय है। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक जाने-माने विद्वान, शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, राजनयिक, देशभक्त और शिक्षा शास्त्री थे। वह अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में अनेक उच्च पदों पर कार्य करते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में सतत योगदान देते रहे। वह मानते थे कि यदि शिक्षा देने का सही तरीका सही है तो समाज की अनेक बुराइयों को जड़ से खत्म किया जा सकता है।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा, कि मात्र जानकारियों का आदान-प्रदान मात्र शिक्षा नहीं है। जानकारी का अपना महत्व है एवं आधुनिक युग में तकनीक की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। व्यक्ति के बौद्धिक झुकाव और उसकी लोकतांत्रिक भावना का भी महत्व है। ये बातें व्यक्ति को देश का एक उत्तरदायी नागरिक बनाती हैं।

शिक्षा का लक्ष्य है ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरंतर सीखते रहने की प्रवृत्ति है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को ज्ञान के साथ-साथ कौशल भी प्रदान करती है। करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास ही शिक्षा के मून उद्देश्य हैं।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता जब तक शिक्षक शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना करना असंभव है । डॉ राधाकृष्णन ने अनेक वर्षों तक अध्यापन किया। एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण डॉ राधाकृष्णन में विद्यमान थे।

उनका कहना था कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनाया जाना चाहिए जो सबसे अधिक बुद्धिमान हों। शिक्षक को मात्र अच्छी तरह अध्यापन करके ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। उसे अपने छात्रों का स्नेह और आदर अर्जित करना चाहिए। सम्मान शिक्षक होने भर से नहीं मिलता, उसे अर्जित करना पड़ता है।

वे कहते थे कि विश्वविद्यालय गंगा-यमुना के संगम के समान शिक्षकों और छात्रों के पवित्र संगम हैं। बड़े-बड़े भवन और साधन सामग्री उतने महत्वपूर्ण नहीं होते, जितने शिक्षक महान होते हैं । विश्वविद्यालय जानकारी बेचने कोई दुकान नहीं हैं, वो ऐसे तीर्थस्थल हैं, जिनमें स्नान करने से व्यक्ति को बुद्धि, इच्छा और भावना का परिष्कार और आचरण का संस्कार होता है।

एक विश्वविद्यालय बौद्धिक जीवन के देवालय हैं, और उसकी आत्मा ज्ञान का शोध है। शिक्षक संस्कृति के तीर्थ और स्वतंत्रता के दुर्ग हैं।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन अनुसार उच्च शिक्षा का कार्य साहित्य, कला और व्यापार-व्यवसाय को कुशल नेतृत्व उपलब्ध कराना है। उसे मस्तिष्क को इस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए कि मानव ऊर्जा और भौतिक संसाधनों में सामंजस्य पैदा किया जा सके। **डॉ. राधाकृष्णन** के जीवन पर महात्मा गांधी का पर्याप्त प्रभाव पड़ा था। सन् 1929 में जब वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में थे तब उन्होंने 'गांधी और टैगोर' शीर्षक वाला एक लेख लिखा था। वह कलकत्ता के 'कलकत्ता रिव्यू' नामक पत्र में प्रकाशित हुआ था। उन्होंने गांधी अभिनंदन ग्रंथ का संपादन भी किया था।

इस ग्रंथ के लिए उन्होंने अलबर्ट आइंस्टीन, पर्ल बक और रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे चोटी के विद्वानों से लेख प्राप्त किए थे। इस ग्रंथ का नाम था 'एन इंट्रोडक्शन टू महात्मा गांधी : एसेज एंड रिफ्लेक्शन्स ऑन गांधीज लाइफ एंड वर्क।' इस ग्रंथ को उन्होंने गांधीजी को उनकी 70वीं वर्षगांठ पर भेंट किया था।

अमेरिका में भारतीय दर्शन पर डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के व्याख्यान बहुत सराहे गए, उन्हीं से प्रभावित होकर सन् 1929-30 में उन्हें मेनचेस्टर कॉलेज में प्राचार्य का पद ग्रहण करने को बुलाया गया। मेनचेस्टर और विश्वविद्यालय में धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर दिए गए उनके भाषणों को सुनकर ,

प्रसिद्ध दार्शनिक बर्टरेंट रसेल ने कहा था, 'मैंने अपने जीवन में पहले कभी इतने अच्छे भाषण नहीं सुने हैं। उनके व्याख्यानों को एच.एन. स्पालिंग ने भी सुना था।

उनके व्यक्तित्व और विद्वत्ता से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में धर्म और नीतिशास्त्र विषय पर एक चेअर की स्थापना की और उसे सुशोभित करने के लिए डॉ. राधाकृष्ण को सादर आमंत्रित किया। सन् 1939 में जब वे ऑक्सफोर्ड से लौटकर कलकत्ता आए तो पंडित मदनमोहन मालवीय ने उनसे अनुरोध किया कि वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर का पद सुशोभित करें। पहले उन्होंने बनारस आ सकने में असमर्थता व्यक्त की लेकिन अब मालवीयजी ने बार-बार आग्रह किया तो उन्होंने उनकी बात मान ली। मालवीयजी के इस प्रयास की चारों ओर प्रशंसा हुई थी।

सन् 1962 में वे भारत के राष्ट्रपति चुने गए। उन दिनों राष्ट्रपति का वेतन 10 हजार रुपए मासिक था लेकिन प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मात्र ढाई हजार रुपए ही लेते थे और शेष राशि प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय राहत कोष में जमा करा देते थे। डॉ. राधाकृष्णन ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की इस गौरवशाली परंपरा को जारी रखा। देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचकर भी वे सादगीभरा जीवन बिताते रहे।

17 अप्रैल 1975 को हृदयाघात के कारण उनका निधन हो गया। यद्यपि उनका शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया तथापि उनके विचार वर्षों तक हमारा मार्गदर्शन करते रहें हैं और करते रहेंगे।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन कहते थे कि शिक्षक का कार्य ज्ञान को एकत्रित करना या अथवा प्राप्त करना

उसके पश्चात उसे बांटना । उसे ज्ञान का दीप बनकर चारों तरफ अपना प्रकाश विकीर्ण करना चाहिए। सादा जीवन उच्च विचार की उक्ति को उसे अपने जीवन में चरितार्थ करना चाहिए। उसकी ज्ञान गंगा सदा प्रवाहित होती रहनी चाहिए। उसे

'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वरः
गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः'

वाले श्लोक को चरितार्थ करके दिखाना चाहिए। इस श्लोक में गुरु को भगवान के समान कहा गया है। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने जाति-मुक्त और वर्गीकृत समाज की स्थापना पर ध्यान केंद्रित करते हुए, भारतीय संस्कृति के प्रसार के लिए विभिन्न रचनाएँ लिखीं।

डॉ. राधाकृष्णन एक महान दार्शनिक थे जिन्होंने हिंदुत्व को उसके वर्तमान स्वरूप में समर्थन दिया। "उपनिषद का दर्शन," "पूर्व और पश्चिम: कुछ प्रतिबिंब," और "पूर्वी धर्म और पश्चिमी विचार" उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है, जो उनके जन्मदिन के साथ मेल खाता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर, 1888 को भारतीय शहर तिरुपति (अब आंध्र प्रदेश) में हुआ था। वह एक प्रसिद्ध शिक्षक होने के साथ-साथ भारत में एक मान्यता प्राप्त अकादमिक और राजनीतिज्ञ थे । वह एक कम आय वाले ब्राह्मण परिवार से थे। उन्होंने शिक्षाविदों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और अक्सर आंध्र प्रदेश, मैसूर और कलकत्ता के विश्वविद्यालयों का दौरा किया। उन्होंने ऑक्सफोर्ड में प्रोफेसर के रूप में भी काम किया और अपने सफल अकादमिक करियर के परिणामस्वरूप दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति बने।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शिक्षा पर विचार :

राधाकृष्णन: ए बायोग्राफी, और जवाहरलाल नेहरू: ए बायोग्राफी की आत्मकथाएँ लिखीं। राधा कृष्णन द्वारा दार्शनिक विचार- राधाकृष्णन ने पश्चिमी बौद्धिक और धार्मिक धारणाओं को शामिल करते हुए गलत पश्चिमी आलोचना के खिलाफ हिंदू धर्म की रक्षा करके पूर्वी और पश्चिमी विचारों को समेटने का प्रयास किया। डॉ राधाकृष्णन नव-वेदांत आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे।

उन्होंने अद्वैत वेदांत पर अपने दर्शन की स्थापना की, लेकिन इसे आधुनिक दर्शकों के लिए फिर से तैयार किया तथा मानव प्रकृति की वास्तविकता और विविधता को पहचाना जिससे उन्होंने परम, या ब्रह्म द्वारा लंगर और स्वीकृत माना। डॉ राधाकृष्णन के लिए, धर्मशास्त्र और पंथ दोनों ही बौद्धिक सूत्रीकरण और धार्मिक अनुभव या धार्मिक अंतर्ज्ञान के प्रतीक हैं। डॉ राधाकृष्णन ने धार्मिक अनुभव की व्याख्या के आधार पर प्रत्येक धर्म को एक ग्रेड दिया, जिसमें अद्वैत वेदांत ने सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त किया।

डॉ राधाकृष्णन ने अद्वैत वेदांत को हिंदू धर्म की बेहतरीन अभिव्यक्ति माना क्योंकि यह अंतर्ज्ञान पर आधारित था, जैसा कि अन्य धर्मों के संज्ञानात्मक रूप से मध्यस्थता वाले विचारों के विपरीत था। डॉ राधाकृष्णन के अनुसार, वेदांत परम प्रकार का धर्म है, क्योंकि यह सबसे प्रत्यक्ष सहज अनुभव और आंतरिक अनुभूति प्रदान करता है,पश्चिमी संस्कृति और दर्शन के अपने ज्ञान के बावजूद, राधाकृष्णन एक मुखर आलोचक थे। निष्पक्षता के अपने दावों के बावजूद, उन्होंने कहा कि पश्चिमी दार्शनिक अपनी सभ्यता के भीतर से धार्मिक शक्तियों से प्रभावित थे।

भारतीय शिक्षा प्रति सर्वपल्ली राधाकृष्णन का योगदान :

सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक भारतीय नेता, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और शिक्षाविद थे। उन्होंने भारत के पहले उपराष्ट्रपति और फिर देश के दूसरे राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया। राधाकृष्णन ने अपने जीवन और करियर को एक लेखक के रूप में समर्पित किया, जो अपने विश्वासों का वर्णन, बचाव और प्रसार करने का प्रयास कर रहा था, जिसे उन्होंने हिंदू धर्म, वेदांत और आत्मा का धर्म कहा।

उन्होंने यह प्रदर्शित करने की कोशिश की कि उनका हिंदू धर्म बौद्धिक और नैतिक रूप से ठोस है। वह भारतीय और पश्चिमी बौद्धिक ढांचे दोनों में सहजता से प्रकट होता है, और उसके गद्य में पश्चिमी और भारतीय दोनों

तत्व शामिल होते हैं। नतीजतन, अकादमिक हलकों में, राधाकृष्णन की पश्चिम में हिंदू धर्म के प्रतीक के रूप में प्रशंसा की गई है।

सर्वपल्ली राधाकृष्णन की शिक्षा :

थिरुत्तानी का केवी हाई स्कूल था जहाँ उन्होंने अपनी प्राथमिक स्कूली शिक्षा प्राप्त की। 1896 में, वे तिरुपति में हरमन्सबर्ग इवेंजेलिकल लूथरन मिशन स्कूल और वालजापेट में सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय गए। उन्होंने अपनी हाई स्कूल की स्कूली शिक्षा के लिए वेल्लोर के वूरहिस कॉलेज में पढ़ाई की। 17 साल की उम्र में कला की पहली कक्षा खत्म करने के बाद, उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में प्रवेश लिया। 1906 में, उन्होंने एक ही विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों उपाधियाँ प्राप्त कीं।

सर्वपल्ली की स्नातक की थीसिस का शीर्षक "द एथिक्स ऑफ वेदांत एंड इट्स मेटाफिजिकल प्रेस्पॉजिशन" था। इस आरोप के जवाब में लिखा गया था कि वेदांत योजना नैतिक विचारों से रहित थी। राधाकृष्णन के दो प्रशिक्षकों, रेव विलियम मेस्टन और डॉ अल्फ्रेड जॉर्ज हॉग ने उनके शोध प्रबंध की सराहना की। राधाकृष्णन की थीसिस प्रकाशित हुई थी जब वे मुश्किल से बीस वर्ष के थे।

सर्वपल्ली राधाकृष्णन परिवार :

16 साल की उम्र में सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिवकामु से शादी कर ली। राधा कृष्णन के दूर के रिश्तेदार शिवकामु लगभग 51 वर्षों तक, राधाकृष्णन और शिवकामु का विवाह आनंदपूर्वक हुआ।राधाकृष्णन पांच बेटियों और एक बेटे सहित छह बच्चों के पिता थे। उनके पुत्र सर्वपल्ली गोपाल एक कुशल भारतीय इतिहासकार थे। उन्होंने अपने पिता, राधाकृष्णन: ए बायोग्राफी, और जवाहरलाल नेहरू: ए बायोग्राफी की आत्मकथाएँ लिखीं।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के दार्शनिक विचार :

राधाकृष्णन ने पश्चिमी बौद्धिक और धार्मिक धारणाओं को शामिल करते हुए गलत पश्चिमी आलोचना के खिलाफ हिंदू धर्म की रक्षा करके पूर्वी और पश्चिमी विचारों को समेटने का निरंतर प्रयास किया। राधाकृष्णन नव-वेदांत आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे, उन्होंने अद्वैत वेदांत पर अपने दर्शन की स्थापना की। परंतु आधुनिक दर्शकों के लिए दोबारा से तैयार किया गया। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने मानव प्रकृति की वास्तविकता और विविधता को पहचाना एवं जिसे उन्होंने परमब्रह्म स्वीकृत माना।

राधाकृष्णन के लिए, धर्मशास्त्र और पंथ दोनों ही बौद्धिक सूत्रीकरण और धार्मिक अनुभव या धार्मिक अंतर्ज्ञान के प्रतीक हैं। राधाकृष्णन ने धार्मिक अनुभव की व्याख्या के आधार पर प्रत्येक धर्म को एक ग्रेड दिया जिसमें अद्वैत वेदांत ने सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त किया। राधाकृष्णन ने अद्वैत वेदांत को हिंदू धर्म की बेहतरीन अभिव्यक्ति माना क्योंकि यह अंतर्ज्ञान पर आधारित था, जैसा कि अन्य धर्मों के संज्ञानात्मक रूप से मध्यस्थता वाले विचारों के विपरीत था।

राधाकृष्णन के अनुसार, वेदांत परम प्रकार का धर्म है, क्योंकि यह सबसे प्रत्यक्ष सहज अनुभव और आंतरिक अनुभूति प्रदान करता है। पश्चिमी संस्कृति और दर्शन के अपने ज्ञान के बावजूद, राधाकृष्णन एक मुखर आलोचक थे। निष्पक्षता के अपने दावों के बावजूद, उन्होंने कहा कि पश्चिमी दार्शनिक अपनी सभ्यता के भीतर से धार्मिक शक्तियों से प्रभावित थे।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पुरस्कार एवं उपलब्धियां :

1954 में, उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। 1968 में, वह साहित्य अकादमी फेलोशिप, साहित्य अकादमी के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित होने वाले पहले व्यक्ति बने। उन्हें 1975 में अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले अहिंसा का समर्थन करने और "भगवान की एक सार्वभौमिक वास्तविकता जिसने सभी लोगों के लिए प्यार और ज्ञान को गले लगाया" पेश करने के लिए टेम्पलटन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। भारत के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति। भारतीय दर्शन को विश्व मानचित्र पर स्थान दिया गया है।

संदर्भ :

1. "डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन | भारत के उपराष्ट्रपति | भारत सरकार". vicepresidentofindia.nic.in. मूल से 18 मई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2019-11-26.
2. "३ जून १९३१ का लन्दन से प्रकाशित गजट पेज ३६२४". मूल से 1 मई 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 सितंबर 2012.
3. राधाकृष्णन, एस. (अक्टूबर 1922)। "हिन्दू धर्म" । इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एथिक्स । शिकागो : शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस . 33 (1): 1-22. दोई : 10.1086/इंटेजेठी.33.1.2377174 । आईएसएसएन 1539-297X । जेएसटीओआर 2377174 । S2CID 144844920 ।
4. भारतीय दर्शन (1923) खंड। 1, 738 पृष्ठ। (1927) वॉल्यूम। 2, 807 पृष्ठ। ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (पहला संस्करण)।
5. द हिंदू व्यू ऑफ लाइफ (1927), लंदन: एलन एंड अनविन। 92 पृष्ठ
6. भारतीय धार्मिक विचार (2016), ओरिएंट पेपरबैक्स , आईएसबीएन 978-81-222042-4-7
7. धर्म, विज्ञान और संस्कृति (2010), ओरिएंट पेपरबैक्स , आईएसबीएन 978-81-222001-2-6
8. जीवन का एक आदर्शवादी दृष्टिकोण (1929), 351 पृष्ठ
9. कल्कि, या भविष्य का सभ्यता (1929), 96 पृष्ठ
10. गौतम बुद्ध (लंदन: मिलफोर्ड, 1938); पहला भारत संस्करण, 1945 ।
11. पूर्वी धर्म और पश्चिमी विचार (1939), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 396 पृष्ठ
12. धर्म और समाज (1947), जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन, 242 पृष्ठ
13. भगवद्गीता: एक परिचयात्मक निबंध के साथ, संस्कृत पाठ, अंग्रेजी अनुवाद और नोट्स (1948), 388 पृष्ठ
14. धम्मपद (1950), 194 पृष्ठ, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
15. प्रधानाचार्य उपनिषद (1953), 958 पृष्ठ, हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स लिमिटेड
16. विश्वास की वसूली (1956), 205 पृष्ठ
17. ए सोर्स बुक इन इंडियन फिलॉसफी (1957), 683 पेज, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, चार्ल्स ए मूर के साथ सह-संपादक।
18. ब्रह्म सूत्र: आध्यात्मिक जीवन का दर्शन। लंदन: जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, 1959, 606 पृष्ठ। [86]
19. धर्म, विज्ञान और संस्कृति (1968), 121 पृष्ठ
20. मूर्ति, के. सच्चिदानंद; अशोक वोहरा (1990)। राधाकृष्णन: उनका जीवन और विचार । सनी प्रेस. आईएसबीएन 9780791403440.
21. माइनर, रॉबर्ट नील (1987)। राधाकृष्णन: एक धार्मिक जीवनी । सनी प्रेस. आईएसबीएन 978-0-88706-554-5.
22. गोपाल, सर्वपल्ली (1989)। राधाकृष्णन: एक जीवनी । दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. आईएसबीएन 0-19-562999-X.
23. पप्पू, एसएस रामा राव (1995)। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के दर्शन में नए निबंध । दिल्ली : साउथ एशिया बुक्स. आईएसबीएन 978-81-7030-461-6.
24. पार्थसारथी, जी.; चट्टोपाध्याय, देवी प्रसाद, सं. (1989)। राधाकृष्णन: शताब्दी खंड । नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
25. "भारत के राधाकृष्णन, दार्शनिक, 86 पर मृत" । न्यूयॉर्क टाइम्स । 17 अप्रैल 1975 । 2 सितंबर 2018 को लिया गया ।
26. "21 मार्च 2010" । www.koumudi.net . 5 सितंबर 2021 को लिया गया ।

27. लॉहेड, विलियम एफ। (2009)। दार्शनिक यात्रा। एक इंटरैक्टिव दृष्टिकोण। पांचवां संस्करण (पीडीएफ) । मैकग्रा-हिल। पी। 382.
28. पोलक, शेल्डन (2011)। "क्राइसिस इन द क्लासिक्स" (पीडीएफ) । सामाजिक अनुसंधान । 78 (1): 21-48. डीओआई : 10.1353/सोर.2011.0015 ।
29. द मद्रास मेल , शनिवार, 8 फरवरी 1936, पृष्ठ 9
30. ब्राउन, डोनाल्ड मैकेंज़ी (1970)। राष्ट्रवादी आंदोलन: रानाडे से भावे तक भारतीय राजनीतिक विचार । कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस। पीपी. 152-153. आईएसबीएन 9780520001831.
31. फ्लड, गेविन डी. (13 जुलाई 1996)। हिंदू धर्म का एक परिचय । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पी। 249 . आईएसबीएन 978-0-521-43878-0.
32. हॉली, माइकल. "सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1888-1975)" । इंटरनेट इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी
33. जैन, रूपल (10 अप्रैल 2013)। "एक अच्छा शिक्षक कैसे बनें" । पुस्तक महल - गूगल बुक्स के माध्यम से।
34. सुब्रमण्यम, अर्चना (2 सितंबर 2017)। "शिक्षक दिवस पर, छात्रों के एक शिक्षक को याद करते हुए" । द हिंदू ।
35. मूर्ति और वोहरा 1990 , पृ. 90.
36. "दार्शनिक, शिक्षक, अध्यक्ष: डॉ एस राधाकृष्णन को याद करते हुए" । द इकोनॉमिक टाइम्स । 5 सितंबर 2017 । 16 अप्रैल 2018 को लिया गया ।
37. "सीएडीइंडिया" । cadindia.clpr.org.in । 20 मार्च 2018 को लिया गया ।
38. शिलप, पॉल आर्थर (1992)। सर्वपल्ली राधाकृष्णन का दर्शन । मोतीलाल बनारसीदास। पी। ix. आईएसबीएन 9788120807921.